1913 ई० में ~~इन्हो~~ इन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन स्वीकार किया और इसे उन्होंने एक नया आयाम दिया। इन्होंने सरस्वती के माध्यम से हिन्दी साहित्य एवं इसके साहित्यकारों को भी मार्गदर्शन किया। इन्होंने न केवल स्वयं निबंध, समालोचना, संस्मरण इत्यादि का लेखन किया वरन अनेक लेखकों को भी लिखने हेतु प्रोत्साहित किया उनकी रचनाओं को सुधारा और उन्हें प्रकाशित किया। मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त जैसे अनेक साहित्यकार इनके मार्गदर्शन से साहित्य जगत में उच्चासन पर आसीन हुए। उस समय किसी पत्रिका का संपादन और प्रकाशन कितना दुष्कर कार्य रहा होगा यह केवल अनुमान का ही विषय हो सकता है। उन्होंने अनेक लोगों के नाम से निबंध लिखे। कहा जाता है कि अनेक बार पूरी की पूरी पत्रिका अनेक लोगों के नाम पर प्रकाशित करवा दी।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपने जीवन काल में लगभग एक सौ ग्रंथों का प्रणयन किया था। अद्भुत आलाप, रसज्ञ रंजन, साहित्य सीकर, विचित्र चित्रण, कालिदास की निरंकुशता, सम्पत्ति शास्त्र, हिन्दी भाषा की उत्पत्ति - आदि ग्रंथ अत्यन्त प्रसिद्ध हुए। द्विवेदी जी उच्च कोटि के निबंधकार थे। हिन्दी साहित्य में निबंध लेखन की परम्परा को इन्होंने परिष्कृत किया तथा नये लेखकों को प्रोत्साहित किया। इनकी इसी विशिष्टता के कारण इन्हें हिन्दी साहित्य का 'जागरण' कहा जाता है। [illegible] अंग्रेजी के पश्चात निबंधकार थे।

द्विवेदी जी का हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति सबसे बड़ा योगदान यह रहा कि उन्होंने भाषा की निरंकुशता को समाप्त कर दिया।

यदि भाषिक अराजकता दूर नहीं हुयी होती तो हिंदी भाषा कदापि आगे नहीं बढ़ पाती। वे ऐसे प्रथम आचार्य थे जिन्होंने एक साथ भाषा, साहित्य एवं साहित्यकारों का परिष्कार किया और हिंदी को उत्कर्ष तक पहुँचने की प्रक्रिया तैयार की। इनके विशिष्ट योगदान के कारण इनके युग को द्विवेदी युग कहा जाता है। 1938 ईस्वी के 21 दिसम्बर को इस महामनस्वी का महाप्रयाण हुआ।